‘आगरा बाज़ार’ नाटक की समीक्षा

डॉ. गरिमा तिवारी
(सहायक प्राध्यापक)
हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी - ८४५४०१, बिहार
E-mail: garimatiwari@mgcub.ac.in

HIND4007: हिंदी नाटक एवं रंगमंच

विषय-सूची

- नाटककार हबीब तनवीर का सामान्य परिचय
- ‘आगरा बाज़ार’: एक परिचय
- ‘आगरा बाज़ार’ नाटक का कथ्य
- ‘आगरा बाज़ार’ नाटक की पात्र-योजना
- ‘आगरा बाज़ार’ नाटक का शिल्प पक्ष
- निष्कर्ष

नाटककार हबीब तनवीर का सामान्य परिचय

- हबीब तनवीर (०१ सितम्बर १९२३ – ०८ जून २००९) एक प्रसिद्ध नाटककार, गीतकार, अभिनेता, पटकथा लेखक एवं नाट्य निर्देशक थे।

- इनका पूरा नाम हबीब अहमद खान था।

- इनकी प्रसिद्धि का आधार इनके तीन बहुचर्चित नाटक, आगरा बाज़ार (१९५४), मिट्टी की गाड़ी (१९५८) और चरणदास चोर (१९७५) हैं।

- हबीब तनवीर का ‘चरणदास चोर’ नाटक पहला ऐसा भारतीय नाटक है जिसे सन १९८२ में ‘*एडिनबर्ग इंटरनेशनल ड्रामा फेस्टिवल*’ में पुरस्कृत किया गया।

- हबीब तनवीर को विभिन्न क्षेत्रों में दिए गए उनके योगदान के लिए कई पुरस्कारों एवं सम्मानों से नवाज़ा गया जिसमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पद्म श्री, पद्म भूषण जैसे सम्मान शामिल हैं।

- हबीब तनवीर को 'हिन्दुस्तानी रंगमंच का श्लाका पुरुष' भी कहा जाता है।

- अपने जीवन काल में इन्होंने अनेकानेक नाटकों की सर्जना की एवं उन्हें रंगमंच पर सफलतापूर्वक उतारा भी।

- हबीब तनवीर ने रंगमंच की लोकधर्मी परंपरा को समृद्ध किया और भारतीय रंगमंच को एक नयी ऊँचाई पर प्रतिष्ठित किया।

- निःसंदेह हिंदी नाट्य साहित्य एवं रंगमंच के क्षेत्र में इनका योगदान अविस्मरणीय है।

‘आगरा बाज़ार’: एक परिचय

- ‘आगरा बाज़ार’ नाटक हबीब तनवीर की सर्वाधिक सफल नाट्य कृतियों में से एक है।

- इस नाटक का सर्वप्रथम मंचन १४ मार्च १९५४ को जामिया मिलिया इस्लामिया के कला विभाग के खुले मंच पर किया गया।

- प्रथम प्रस्तुति में ही यह नाटक दर्शकों के दिलों दिमाग पर छा गया। इसके अलावा ‘नया थिएटर’ के मंच पर भी हबीब तनवीर द्वारा स्व-रचित यह नाटक खेला गया।

- इस नाटक का पुस्तक के रूप में प्रकाशन सन १९५४ में ‘आज़ाद किताबघर’ से हुआ जिसके दो संशोधित संस्करण क्रमशः सन १९७० और सन १९८९ में प्रकाशित हुए।

- ‘आगरा बाज़ार’ नाटक की रचना हबीब तनवीर ने १८वीं सदी के भारतीय शायर एवं नज़्म के पिता कहे जाने वाले नज़ीर अकबराबादी को प्रतिष्ठित करने के लिए किया।

- हबीब तनवीर ने स्वयं इस बात का उल्लेख किया है – “ये हक़ीकत है कि उनका कलाम जिन्दा जावेद है l ड्रामे के अंदर कलामे-नज़ीर के उस पहलू को उजागर करना चाहता था और उसी को मैंने अपना मौजूं बनाया l नज़ीर उर्दू नज़्म के बाबा आदम हैं l”

‘आगरा बाज़ार’ नाटक का कथ्य

- हबीब तनवीर ने अपने इस नाटक के माध्यम से निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है –

- **बेरोज़गारी का वर्णन -**

है अब तो कुछ सुखन का मेरे इख़्तियार बंद
रहती है तबअ सोच में लैलो – निहार बंद
दरिया सुखन की फ़िक्र का है मौजदार बंद
हो किस तरह न मुँह में जुबां बार-बार बंद
जब आगरे की खल्क का हो रोज़गार बंद।

- शायरों के जीवन का वर्णन
- सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं का चित्रण
- लोकजीवन और लोकपरम्पराओं का चित्रण

- स्थानीय संस्कृति का चित्रण
- साहित्य, प्रकाशक और बिक्री पर व्यंग्य
- समाज की स्थिति का एक बाज़ार के रूप में चित्रण

- साहित्यकारों और प्रकाशकों की सुस्ती और पक्षपात का वर्णन
- पुलिस व्यवस्था की कार्यशैली पर प्रश्न
- व्यापारियों के दर्द का चित्रण

- इतिहास के फलक पर आधुनिक समस्याओं का चित्रण
- नज़्म के पितामह नज़ीर अकबराबादी को प्रतिष्ठित करना

‘आगरा बाज़ार’ नाटक की पात्र-योजना

- ‘आगरा बाज़ार’ नाटक में हबीब तनवीर ने नायकत्व की परंपरागत अवधारणा का खंडन किया है।
- नाटक में कोई भी पात्र केन्द्रीय भूमिका में नहीं है।
- दो अंकों के इस नाटक में पात्रों की संख्या बहुत अधिक है।

- इस नाटक के पहले अंक के पात्र फ़क़ीर, लड्डू वाला, तरबूज वाला, बर्फ वाला, ककड़ी वाला, पान वाला, मदारी, बर्तन वाला, अजनबी, शायर इत्यादि अनेक पात्र हैं।

- दूसरे अंक के पात्र पतंग वाला, अंधा भिखारी, हमीद, एक आदमी, बेनी प्रसाद, होली गाने वाले, सिपाही, तबलची और सारंगियां हैं।

- पात्रों की अत्यधिक संख्या से नाटकीय तत्व विधान त्रुटिपूर्ण प्रतीत होता है।

‘आगरा बाज़ार’ नाटक का शिल्प पक्ष

- ‘आगरा बाज़ार’ नाटक अपने प्रयोगशील शिल्प के कारण भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- हबीब तनवीर ने इस नाटक में लोकजीवन का चित्रण, लोकनाट्य शैली में रम कर किया है।
- ‘आगरा बाज़ार’ की भाषा शैली पर भारत रत्न भार्गव का यह कथन उचित जान पड़ता है – ‘आगरा बाज़ार में प्रयुक्त संवादों में भाषा के कई स्तर हैं। बाज़ार के बीच आम आदमियों द्वारा बोली जाने वाली भाषा, ठेठ आंचलिक भाषा है। किताबों की दुकान पर अदीबों और शायरों की जुबां का अंदाज़ निहायत अदब और कायदे की नफासत लिए हुए है।’

- आगरा के बाज़ार में पान बेचने वाले की भाषा का एक नमूना इस प्रकार है – "आओ बाबूजी, बनारसियों में। बनारसियों के टुकड़े लगा दिये हैं। पान खाओ, मुँह रचाओ। इलायचियाँ क़तर डाली हैं, इलायचियाँ। बड़े – बड़े टुकड़े लगाये हैं, बड़े-बड़े।

- इस नाटक में फ़क़ीर द्वारा बोली जाने वाली भाषा कुछ इस प्रकार है –

  रोटी न पेट में हो तो कुछ भी जतन न हो
  मेले की सैर, ख्वाहिशें-बागी-चमन न हो
  भूखे गरीब दिल की खुदा से लगन न हो
  सच है कहा किसी ने कि भूखे भजन न हो।

- नज़ीर अकबराबादी की नज्मों पर आधारित होने के कारण इस नाटक में उर्दू और फारसी के शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है।

- अतः शिल्प की दृष्टि से यह एक सफल नाटक माना जाता है।

निष्कर्ष

- हबीब तनवीर द्वारा लिखा जाने वाला यह नाटक हिंदी नाट्य साहित्य के इतिहास में अपना एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

- नज़ीर अकबराबादी के नज्मों, उनके जीवन, उनके परिवेश पर आधारित होते हुए भी यह नाटक तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है।

- हबीब तनवीर ने इस नाटक में आम आदमी की जिन्दगी की वास्तविक स्थिति को उसके समूचे परिवेश के साथ चित्रित किया है।

- हबीब तनवीर नाटकों को आम जनमानस से जोड़ने के पक्ष में थे। अतः उन्होंने लोक संस्कृति, लोकजीवन में रच बस कर एक अलग रंग दृष्टि विकसित की और निःसंदेह 'आगरा बाज़ार' उसी नवीन रंग दृष्टि का परिणाम है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. 'आगरा बाज़ार' – हबीब तनवीर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण (२००४)

2. हिंदी नाटक – डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, तीसरा संस्करण (२०१८)

3. रंगमंच का सौंदर्य शास्त्र – देवेन्द्र राज अंकुर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण (२००६)

धन्यवाद